अरबी की वैज्ञानिक खेती

अरबी की खेती सब्जी के लिए की जाती है। मुख्यत: यह फलों के बगीचों में अंतराशस्य के रूप में बहुत उपयोगी फसल है। कृषक इसे बगीचों में लगाकर अपनी आय में बढ़वार कर सकते है। अरबी में कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, वसा, बीटा-केरोटिन, थाईमिन, राइबोफ्लेविन, विटामिन-सी, कैल्शियम एवं आयरन पाया जाता हैं। इसके कंदों में स्टार्च की आधिक मात्रा होती है।

है।

औषधि की दृष्टि से अरबी गैस्ट्रिक रोगियों के लिए फायदेमंद है। वही इससे निर्मित फ्लॉर यानि आटा बेबी फूड के लिए प्रयोग में लिया जाता है। हवाई एवं पोलीनीशिया में ''पोई॰ एक प्रचलित अम्लीय किण्वित पदार्थ है, जो की अरबी से बनाया जाता है।

अरबी के सभी भाग चाहें वो कंद हो या पत्ते उपयोग किए जाते है, इसके पत्तों से बनाया जाने वाला ॰पतोड़॰ एक प्रमुख व्यंजन है। भारत में अरबी का उपयोग सब्जी के लिए तथा स्लाइसेस एवं चिप्स बनाने में भी लिया जाता है।

जलवायु एवं भूमि

अरबी एक गर्म मौसम की फसल है, जिसे गर्मी और बरसात दोनों मौसमों में उगाया जा सकता है। इसके लिए औसतन तापमान 21-27एसे. की आवश्यकता होती है। इसकी खेती के लिए गहरी उपजाऊ व अच्छे जल निकास वाली दोमट भूमि, जिसका पी.एच. 5.5-7 हो उपयुक्त रहती है।

उन्नत किस्में

अरबी में स्थानीय किस्मों के अतिरिक्त मुक्तकेशी, सी.ओ-1, पंचमुखी, सहस्रमुखी, पंजाब अरबी-1, श्री पल्लवी, श्री किरन तथा श्री रश्मि उत्पादन लेने हेतु उपयुक्त किस्में है।

बीज दर- अरबी के लिए 10-15 क्विंटल प्रति हैक्टेयर रोपण सामग्री की आवश्यकता होती है।

खेत की तैयारी एवं बुवाई

अरबी के उत्पादन के लिए कृषक सबसे पहले खेत की गहरी जुताई करके, उसे समतल कर लें। इसकी बुवाई हेतु 45 सेमी. की दूरी पर मेड बना लेना चाहिए, फिर 30 सेमी. की दूरी पर कंद की बुवाई करें। कृषक बुवाई करते समय यह बात अवश्य ध्यान रखें, कि इसके बीज यानी कंद की गहराई 2.5-7.5 सेमी. तक होनी चाहिए। अरबी की खेती फरवरी-मार्च तथा जून-जुलाई माह में की जाती है।

खाद एवं उर्वरक

अरबी के उचित उत्पादन हेतु 150-200 क्विंटल प्रति हैक्टेयर गोबर की खाद खेत तैयार करते समय देनी चाहिए। इसके अतरिक्त 50 किलो ग्राम, नत्रजन, 50 किलो ग्राम फॉस्फोरस तथा 100 किलो ग्राम पोटाश प्रति हैक्टेयर खेत तैयार करते समय खेत में मिला दें। इसके बाद 50 किलोग्राम नत्रजन खेत में एक माह बाद देना चाहिए।

सिंचाई एवं निराई-गुड़ाई

गर्मी में अरबी में सिंचाई 8-10 दिन के अंतराल एवं वर्षाऋतु में अवश्यकतानुसार करनी चाहिए। इस फसल में 3-4 सप्ताह बाद निराई एवं गुड़ाई की आवश्यकता होती है। बरसात के बाद मेढों पर मिट्टी चढ़ानी चाहिए।

खुदाई एवं उपज

अरबी की किस्मों के अनुसार उचित समय पर खुदाई करनी चाहिए। यह फसल 130-140 दिन में पककर तैयार हो जाती है। कंदों को सम्पूर्ण पकने के बाद ही बाजार भेजने और संग्रहित करने के लिए खोदना चाहिए। इसकी औसतन उपज 150 क्विंटल प्रति हैक्टेयर होती है।

बीज संग्रहण

जब अरबी के पौधों की पत्तियाँ पूरी सूखकर गिर जाती हैं, तब जडों को क्षति पहुँचाये बिना पौधों को जड़ों सहित उखाड़ लेना चाहिए तथा ठंडी जगह पर सुरक्षित रख देना चाहिए।

कीट प्रबंध

अरबी में एफिड तथा इल्ली इसके पत्तियों को हानि पहुंचती है, इसके नियंत्रण हेतु 0.05: क्यूनालफोस या डायमेथोऐट का घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए। मीली बग एवं स्केल कीट इसके कंद को हानि पहुंचाते है, इसके नियंत्रण हेतु हमें एसी रोपण सामग्री का प्रयोग करना चाहिए, जो इस कीट से मुक्त हो एवं बुवाई से पहले उसे 10 मिनट तक 0.05: के घोल में डुबाकर रखना चाहिए तत्पश्चात बुवाई करें।

व्याधि प्रबंध

अरबी में मुख्यतः लीफ ब्लाइट की समस्या आती है, जिसके कारण कभी-कभी 50: तक भी फसल का नुकसान हो जाता है। इसके नियंत्रण हेतु हमें प्रतिरोधी किस्मों जैसे मुक्तकेशी तथा जंखरी का प्रयोग करना चाहिए, जल्दी बुवाई करना चाहिए, जिससे फसल पर भारी बरसात का प्रभाव ना पड़े, अच्छी रोपण सामग्री का उपयोग करें, फफूंदीनाशक मन्कोजेब (0.02:) या रिडोमिल 2 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें एवं कंदों को बुवाई से पूर्व ट्राईकोडर्मा विरिडी से उपचारित करें।

■■■